लक्ष्मी की पेंसिल

कितना जान पाते हैं हम अपनी कक्षा के बच्चों को?

उषा शर्मा

लक्ष्मी से मेरी मुलाक़ात जुलाई 2013 में हुई थी। वह दिल्ली के एक सरकारी स्कूल में पहली क्लास की छात्रा थी। इस स्कूल में मैंने लक्ष्मी को तीन महीने पढ़ाया। इसी स्कूल में अहाना और आस्तिक से भी अच्छा खासा परिचय है। और यह लेख मुख्यतः इन तीनों बच्चों के बारे में है।

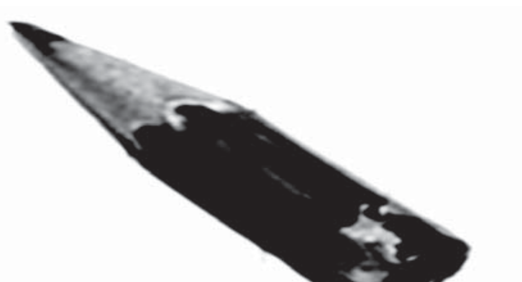
यह सरकारी स्कूल दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्र में है। इस स्कूल में ज़्यादातर वे बच्चे पढ़ने आते हैं जिनके पिता या तो सब्जियाँ बेचते हैं या मज़दूरी करते हैं या किसी दुकान पर काम करते हैं और माँएँ दूसरों के घरों में या तो काम करती हैं या मज़दूरी करती हैं या सिलाई का काम करती हैं।



शुरुआत लक्ष्मी की बात से करते हैं। दरअसल लक्ष्मी की बहुत सारी बातों ने मुझे बहुत 'फ़ैसीनेट' किया। सबसे पहले उसकी पेंसिल के बारे में बात करते हैं। लक्ष्मी के पास लिखने के लिए एक बहुत ही छोटी पेंसिल हुआ करती थी। एक ही पेंसिल से तो लगातार लिख नहीं सकती तो हर बार उसके पास इतनी छोटी पेंसिल आती कहाँ से थी। आप ख़ुद ही उसकी पेंसिल का साइज़ देख लीजिए।

लक्ष्मी की पेंसिल

हैरानी की बात है कि एक छह-सात साल की बच्ची इतनी छोटी पेंसिल से लिखने का काम करे। बहुत सारे बच्चे ऐसे होते हैं जिन्हें घर के हालातों के कारण बहुत सारे समझौते करने पड़ते हैं। लिखने के लिए एक अच्छी पेंसिल तो हर बच्चे का अधिकार है, वह तो उसे मिलनी ही चाहिए, लेकिन लक्ष्मी जैसे बहुत सारे बच्चों के पास यह मूलभूत सुविधा भी नहीं होती। फिर भी वे पढ़ने-लिखने में अपनी पूरी 'जान' लगा देते हैं। कोई और बच्चा होता तो कहता कि मैं तब पढ़ूँगा जब मुझे नई वाली पेंसिल लाकर दोगे। लेकिन लक्ष्मी ने ऐसी कोई शर्त कभी नहीं रखी होगी! मुझे इस बात का पूरा अन्दाज़ है कि लिखते समय उसे पेंसिल को सँभालने में कितनी तकलीफ़ होती होगी! लक्ष्मी की इस बात से मुझे महसूस हुआ कि बच्चों की पढ़ने-लिखने में बहुत रुचि होती है। लक्ष्मी की एक और ख़ास बात थी, उसका झट से जवाब देना। मेरी या अपनी क्लास के बाक़ी बच्चों की कही हुई बातों के बदले वह जो जवाब देती थी, वे सुनने



चित्र 1 लक्ष्मी की पेंसिल

लायक़ होते थे। इसी क्लास में एक और बच्ची थी इकरा। वह रोज़ स्टील के टिफ़िन में खाना लाती थी। हालाँकि स्कूल से मिड-डे मील यानी मध्याह्न भोजन मिलता था। इकरा को अपना टिफ़िन खोलने में दिक़्क़त होती थी इसलिए वह अकसर अपना टिफ़िन मुझसे खुलवाती थी। क्लास के बाक़ी बच्चे भी पीछे क्यों रहें! वे भी अपने-अपने टिफ़िन और बोतलें मुझसे खुलवाने लग गए।

ऐसा बच्चों में अकसर होता है कि अगर क्लास का कोई एक बच्चा टीचर से कोई काम करवाए तो बाक़ी बच्चे भी वही या उस जैसा काम लेकर टीचर के पास आ जाते हैं। इतना ही नहीं, अगर कोई बच्चा नया टिफ़िन या बोतल लाता है तो उस दिन उस बच्चे को प्यास और भूख भी बहुत जल्दी और बार-बार लगेगी! उसे टीचर को अपना नया टिफ़िन बॉक्स या बोतल जो दिखानी है। ख़ैर, हम वापस इकरा पर आते हैं। जब इकरा हर बार की तरह मेरे पास अपना टिफ़िन खुलवाने आई तो लक्ष्मी ने झट से कहा, ''मैडम क्या तुम्हारी नौकरानी लगी हैं– जो आ जाती हो अपना टिफ़िन और बोतल खुलवाने!'' मैंने उस समय तो लक्ष्मी को टोक दिया कि इसमें 'नौकरानी' वाली बात कैसे आ गई! आप भी तो काम करते हैं न! इसमें क्या हुआ? पता नहीं लक्ष्मी को मेरी बात समझ आई या नहीं लेकिन मुझे यह समझ आया कि बच्चों के मन में हमने ही दोहरे मापदण्ड डाल दिए हैं। बच्चे मैडम का काम करें तो वे 'नौकर' नहीं लेकिन अगर मैडम बच्चों का काम कर दें तो वे 'नौकर' / 'नौकरानी' बन जाती हैं। ऐसा क्यों? इस बात ने मुझे यह अच्छे से समझा दिया कि अभी हिन्दी और गणित के अलावा और भी बहुत कुछ है जिसे बच्चों को सीखना है, 'लर्न' करना है। लेकिन उससे पहले बहुत कुछ है जिसे भूलना या 'अनलर्न' करना ज़रूरी है, जैसे 'नौकरानी' वाली बात।



एक दिन और भी ग़ज़ब किस्सा हुआ। जैसा कि मैंने बताया कि बच्चों को स्कूल में दोपहर का भोजन मिलता था। जैसे ही आधी छुट्टी होती तो मैं आदत के अनुसार सभी बच्चों से खाना लेने को कहती। बच्चे अपने-अपने टिफ़िन बॉक्स लेकर क्लास के बाहर लाइन बनाकर खड़े हो जाते और खाना लेकर फिर क्लास में आ जाते। एक दिन जब मैंने खाना लेने के लिए कहा तो लक्ष्मी तपाक से ताना मारने वाले अन्दाज़ में बोल पड़ी– ''ख़ुद तो खाती नहीं हैं, हमसे कहती हैं कि खाना खा लो।'' यह सुनकर मैं मुस्करा भर दी।

लेकिन यक़ीन मानिए मन-ही-मन मैं बहुत ज़ोर-ज़ोर से हँस रही थी। उसकी बात तो ठीक थी ही! ख़ैर, अगले दिन से मैं भी स्कूल में खाना लेकर जाने लगी और बच्चों के साथ बैठकर खाने लगी। यह मेरे लिए बहुत ही प्यारा अनुभव था– बच्चों का साथ होना, बच्चों के साथ हँसते-गपियाते भोजन खाना। लक्ष्मी के बारे में एक और बात करने का बहुत मन है। एक दिन लक्ष्मी खाना नहीं लाई। मैंने कई बार कहा,''लक्ष्मी, आज स्कूल वाला खाना ही खा लो!'' लेकिन लक्ष्मी टस-से-

मस नहीं हुई और अजीब-सी आँखों से मुझे देखती रही। मैंने उसे सेब भी दिया, उसने वह भी खाने से मना कर दिया। थोड़ी देर बाद लक्ष्मी की दोस्त ज्योति मेरे पास आई और मेरे कान में हल्के से कहने लगी,''आज लक्ष्मी की मम्मी ने खाना नहीं बनाया इसलिए उसने खाना नहीं खाया।'' ''क्यों?''– मैंने जानना चाहा। ''कल रात लक्ष्मी के पापा ने लक्ष्मी की मम्मी को मारा था, वह शराब पीते हैं न, तो लक्ष्मी की मम्मी ने सुबह खाना नहीं बनाया।'' मुझसे कुछ न कहते बना– न तो लक्ष्मी से और न ही उसकी मम्मी से जो पूरी छुट्टी होने पर उसे लेने लाई थीं।

और लक्ष्मी की एक सबसे ख़ास बात यह है कि उसे झोंपड़ी बनाना बहुत पसन्द है। आप कहेंगे कि इसमें ख़ास क्या है? सभी बच्चे झोंपड़ी बनाते हैं। लेकिन अगर मैं कहूँ कि आप मेरी एक तस्वीर बनाइए या अपने दोस्त की तस्वीर बनाइए तो आप क्या बनाएँगे? ज़ाहिर-सी बात है कि आप मेरी और अपने दोस्त की तस्वीर बनाएँगे। लेकिन अगर आपकी जगह लक्ष्मी होगी तो वह ऐसा नहीं करेगी। वह सबसे पहले झोंपड़ी बनाएगी, फिर मेरी या अपने दोस्त की तस्वीर बनाएगी। अब आपको पता चल गया होगा कि मैं क्यों लक्ष्मी की झोंपड़ी बनाने को ख़ास कह रही थी! उसकी इस ख़ास आदत का पता तब चला जब एक दिन मैं बच्चों के साथ उनके परिवार के बारे में बात कर रही थी और मैंने सभी से अपने-अपने परिवार के लोगों की तस्वीरें बनाने के लिए कहा। सभी बच्चों ने कुछ-न-कुछ बनाया। लेकिन लक्ष्मी ने अपनी आदत के अनुसार सबसे पहले झोंपड़ी बनाई और फिर परिवार के बाक़ी सदस्य! ऐसा नहीं है कि लक्ष्मी को सिर्फ़ झोंपड़ी ही बनाना आता था। वह और भी बहुत कुछ बनाती है। होता यह है कि बच्चे जिस चीज़ को पसन्द करते हैं, जिसे वे बार-बार कहीं-न-कहीं देखते हैं- अकसर वही बनाते हैं, उसी के बारे में बात करते हैं और उसी के बारे में लिखते हैं। धीरे-धीरे उनके इन सब कामों में बदलाव आता जाता है, यानी एक बार झोंपड़ी जिस तरीक़े से बनी थी कुछ समय बाद उस झोंपड़ी में और सफाई आती चली जाएगी। लक्ष्मी की झोंपड़ी में भी लगातार बदलाव आता गया। बच्चों की ड्राइंग से, उनके लिखने से, उनके मन के बारे में भी पता चलता है। बच्चे अपने आस-पास जो देखते हैं उसके बारे में बहुत कुछ सोचते हैं, महसूस करते हैं और जब मौक़ा मिले तो उसके बारे में बात करते हैं या अपने मन की बात को किसी-न-किसी तरह व्यक्त करते हैं।

लक्ष्मी की रसोई

एक और दिन की बात है। मैंने हिंदी की किताब में दिए गए रसोईघर (किचन) के बारे में बच्चों से बात की। उनकी रसोई में क्या-क्या सामान है? कौन-कौन क्या-क्या बनाता है? रसोई में और कौन-कौन रहता है? आदि। सबने अपनी-अपनी रसोई के बारे में अपनी बात कही और फिर मैंने उन सबसे अपना-अपना रसोईघर बनाने के लिए कहा। सोचिए, लक्ष्मी क्या बना रही होगी? झोंपड़ी! मैंने लक्ष्मी से कहा, ''लक्ष्मी, झोंपड़ी नहीं बनानी है, अपना रसोईघर बनाओ। उसमें क्या-क्या है, वह बनाओ।'' लक्ष्मी का जवाब था, ''मैडम बना तो रही हूँ।'' ''कहाँ बना रही हो लक्ष्मी? तुम तो फिर से झोंपड़ी ही बना रही हो।''- मैंने कहा। ''मैडम, झोपड़ी के अन्दर प्लेट, कटोरी, गिलास बनाऊँगी न!''- लक्ष्मी ने समझाने वाले अन्दाज़ में कहा। मैंने कुछ नहीं कहा और मैं बाक़ी बच्चों का काम देखने आगे बढ़ गई।



चित्र 2 लक्ष्मी द्वारा बनाया गया रसोई का चित्र

एक और दिन की एक और बात! पहली क्लास की टीचर दीपा मैडम का प्रमोशन हो गया और वह अक्तूबर के पहले हफ़्ते में स्कूल छोड़कर बड़े बच्चों के दूसरे स्कूल में चली गईं। उनके जाने के कुछ दिन बाद मैंने सब बच्चों से कहा, ''मुझे दीपा मैडम की बहुत याद आ रही है। उनके बिना क्लास में कुछ मज़ा नहीं आ रहा है। क्या तुम सबको भी दीपा मैडम की याद आ रही है?'' ''हाँ, हमें भी दीपा मैडम की याद आ रही है।'', सब एक साथ बोल पड़े। ''तो क्यों न उन्हें चिट्ठी लिखें?'', मैंने सुझाव दिया तो सबने मान लिया और सभी बच्चों ने अपने-अपने तरीक़े से दीपा मैडम को चिट्ठी लिखी। जानते हैं लक्ष्मी ने चिट्ठी कैसे लिखी? कुछ ऐसी! लक्ष्मी ने चिट्ठी में फिर से झोंपड़ी बनाई और फिर दीपा मैडम की तस्वीर!

दीपा मैडम को लिखी चिट्ठी

क्लास के बाक़ी बच्चों ने भी अपने-अपने तरीक़े से दीपा मैडम को चिट्ठी लिखी। हाँ, तस्वीर हर बच्चे ने बनाई। हर बच्चे ने अलग



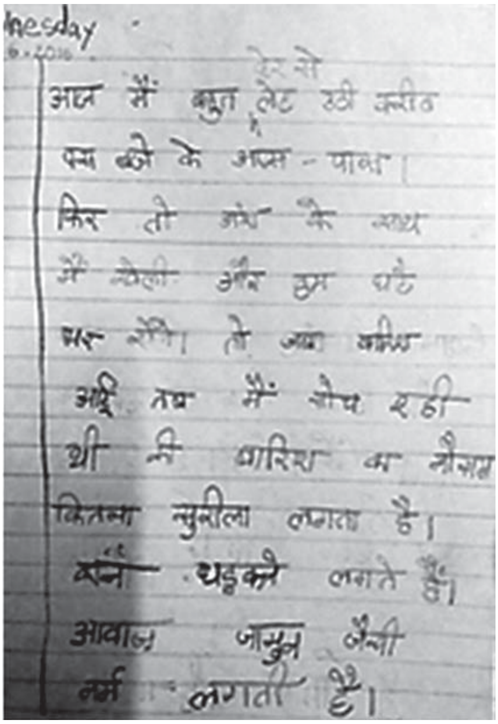
चित्र 3 दीपा मैडम को लिखी गई लक्ष्मी की चिट्ठी

तरीक़े से अपने मन की बात कही। कुछ ने पंक्तियाँ लिखीं तो कुछ ने शब्द, तो कुछ ने केवल तस्वीर बनाकर दीपा मैडम का नाम लिखा। बच्चों की इन चिट्ठियों में बच्चों का पूरा संसार देखा जा सकता है कि वे किसे कितना प्यार करते हैं। किसी के न होने पर वे कितना ख़ालीपन महसूस करते हैं। और भी न जाने क्या-क्या... जिसे आप केवल महसूस कर सकते हैं, उसके बारे में बताने के लिए आपको शब्द ही नहीं मिलते।

लक्ष्मी के साथ-साथ मैं दो और बच्चों अहाना और आस्तिक के साथ हुई अन्त:क्रिया और अवलोकन भी आपके साथ साझा करना चाहूँगी।

अहाना का लेखन

अहाना उर्फ़ बिन्दी को बचपन से ही लिखने का बहुत शौक़ है। हालाँकि वह अभी भी बच्ची ही है और तीसरी कक्षा में पढ़ती है। उसकी एक और ख़ास बात यह है कि पेन, पेंसिल और डायरी या नोटबुक ख़रीदने से उसका मन ही नहीं भरता। जब भी उससे मिलना होता तो उसके हाथ में पेन या पेंसिल होती और वह काग़ज़ की तलाश में होती। अहाना का लिखने का यह शौक उसके लेखन में नज़र भी आता है। वह सिर्फ़ लिखती ही नहीं है बल्कि लिखने को अपनी ज़िन्दगी में अलग-अलग कामों के लिए इस्तेमाल भी करती है। अहाना जब लिखती है तो उसमें पूरी तरह डूब जाती है। उसके शब्दों का चुनाव बहुत अलग-सा होता है और ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि वह सोचती ही अलग तरीक़े से है। पहली बात तो तीसरी क्लास का बच्चा अपने उठने के बारे में लिखेगा ही नहीं और वह भी लेट उठने के बारे में। 'आज मैं बहुत लेट उठी क़रीब दस बजे के आसपास।' अहाना की इस पहली पंक्ति को पढ़ने के बाद यह सहज ही कहा जा सकता है कि वह वैसा ही लिखती है जैसा वह सोचती है या जैसा उसे कहना होता है। कहीं कोई दुराव-छिपाव नहीं।

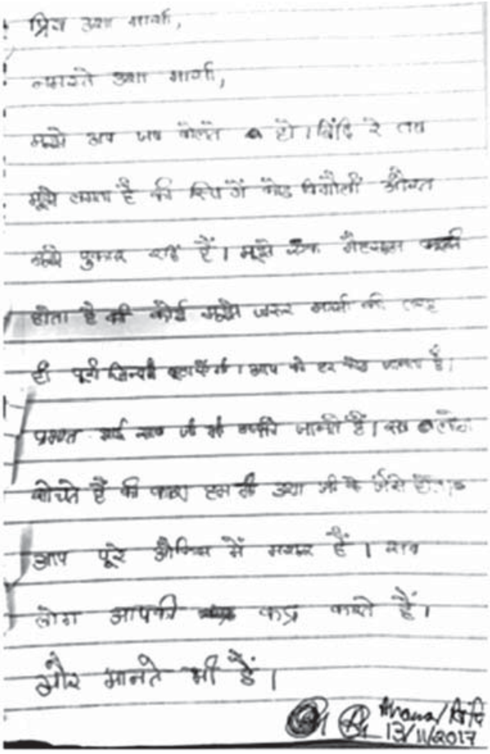


चित्र 4 अहाना का लेखन

पहले वाक्य में 'देरी से' को जोड़ना यह बताता है कि उसके पास भाषा की वैकल्पिक व्यवस्था भी है। लेकिन जब वह लिखना शुरू करती है तो उसके प्रवाह में 'संशोधन' के बाधक तत्त्व को शामिल होने का मौक़ा ही नहीं देती। बच्चों के लेखन के सन्दर्भ में यह बात बहुत पते की है कि लिखते समय उनका पूरा ध्यान केवल लेखन पर होता है जो एक तरह से विचारों की अभिव्यक्ति है, विचारों का प्रवाह है या फिर चिन्तन प्रक्रिया है। लेखन के सन्दर्भ में यह बात बहुत मायने रखती है कि हम जैसा सोचते चले जाएँ, वैसा लिखते भी चले जाएँ। इससे हमारे सोचने के तरीक़े और सोचने के स्तर के बारे में भी साफ़-साफ़ जानकारी मिलती है। 'फिर तो मैं अंश के साथ खेली और हम घण्टेभर खेले।' यह वाक्य भी बेहद ख़ास है जिसमें यह स्वर सुनाई देता है कि देर से उठने के बाद तुरन्त खेलना ज़रूरी था, वह भी समय गँवाए बिना। आमतौर पर बच्चे बारिश को देखकर यही कहते हुए नज़र आएँगे कि कितनी बारिश हो रही है, सब तरफ़ पानी भर गया। चलो, काग़ज़ की नाव तैराते हैं। लेकिन अहाना ने कुछ इस तरह लिखा– 'बारिश का मौसम कितना सुरीला लगता है। कान धड़कने लगते हैं। आवाज़ जामुन जैसी नर्म लगती है।' बारिश का ऐसा वर्णन मेरी कल्पना से भी परे है। बारिश का ऐसा वर्णन न तो कभी पढ़ा और न ही कभी सुना। ऐसा 'रूपक' किसी भी कविता के काव्य सौन्दर्य को द्विगुणित कर देता है। अगर आप ग़ौर करें तो अहाना के द्वारा इस्तेमाल किए गए 'सुरीला / धड़कने / आवाज़ / नर्म' शब्द; वाक्य में अहाना के संगीत से नजदीकी सम्बन्ध के बारे में भी 'गुपचुप' बता जाते हैं। इसका एक निहितार्थ यह है कि बच्चे जिन चीज़ों में 'शामिल' होते हैं उनसे जुड़े शब्द उनकी कल्पना और कल्पना भरी अभिव्यक्ति में सहजता से प्रकट हो जाते हैं। वास्तव में बारिश के मौसम का 'सुरीला' होना, कान का 'धड़कना' और आवाज़ का 'जामुन-सा नर्म' होना, अद्भुत कल्पना है और यह कल्पना करना किसी भी स्कूल में नहीं सिखाया जाता है। अगर शाला कल्पना की ऐसी उड़ान को पोषित करे तो वह बच्चों की बहुत बड़ी मदद होगी।

अहाना की एक और चिट्ठी

अहाना ने अपनी मौसी को भी एक चिट्ठी लिखी। वैसे मैं बता दूँ कि अहाना को चिट्ठी लिखना बहुत पसन्द है। तो चिट्ठी कुछ इस तरह थी। इस चिट्ठी में अहाना ने वैसा ही लिखा, जो उसके मन में जैसे-जैसे आया या जैसा वह अपनी मौसी को 'फ़ील' (महसूस) करती है, अपनी मौसी के बारे में सोचती है। इस चिट्ठी में आप क्या देखेंगे? मन की बात या यह कि शब्द कैसे लिखे हैं यानी उनकी वर्तनी? बिल्कुल सही, मन की बात! हम क्या कहना चाहते हैं यह अधिक महत्त्वपूर्ण है, वर्तनी या स्पैलिंग तो बच्चे धीरे-धीरे सीख ही जाएँगे और यक़ीन मानिए सीख जाते हैं। ठीक वैसे ही जैसे हम बोलते-बोलते बोलना सीख जाते हैं, वैसे ही हम लिखते-लिखते लिखना सीख जाते हैं। बस हमें बच्चों को पढ़ने-लिखने के अधिक-से-अधिक मौक़े देने होंगे। 'मूझे लगता है की स्चि


प्रिय उषा शार्मा,

नमस्ते उषा शार्मा,

[illegible]

[illegible]

[illegible] पुकार [illegible] हैं। [illegible]

होता है की कोई [illegible] जरूर [illegible]

ही पूरी जिन्दगी [illegible]। आप को हर [illegible] हैं।

[illegible] जानती हैं। [illegible]

सोचते हैं की [illegible] उषा जी [illegible]

आप पूरे [illegible] में [illegible] हैं। [illegible]

लोग आपकी [illegible] करते हैं।

और मानते भी हैं।

[illegible] 13/11/2017

चित्र 5 अहाना की एक और चिट्ठी

में कोइ बिगौलीं औरत मूझे पुकार रहिं हैं। मूझे एक मैहसूस होता है की कोई मूझे ज़रूर मासी की तरह ही पूरी जिन्दगी बूलाऐंगी।' अहाना के इस लेखन में उसके मन की बात में सबसे ख़ास बात यही है कि वह 'महसूस' कर सकती है। भले ही वह महसूस को वैसा ही लिखे जैसे वह बोलती है (मैहसूस) हम भी वैसा ही बोलते हैं। एक और ख़ास बात यह कि वह अनुस्वार या शब्दों में ऊपर लगाई जाने वाली बिन्दी से अच्छे से परिचित है। उसे मालूम है कि अपने से बड़ों के लिए सम्मान रूप में 'रहीं, हैं, बुलाएँगी' जैसे शब्द लिखे जाते हैं भले ही अहाना ने अनुस्वार या बिन्दी का इस्तेमाल एक-दो जगह ठीक न किया हो लेकिन लगभग पूरी चिट्ठी में उसका यह प्रयोग ठीक है। मेरी तरह आपको भी उसकी चिट्ठी में यह हिस्सा सबसे ज़्यादा पसन्द आया होगा। कम-से-कम 'मूझे लगता है की', 'मूझे एक मैहसूस होता है की', 'मासी की तरह ही पूरी जिन्दगी' जैसे भाषा के प्रयोग तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले आम बच्चे के लिए सहज नहीं हैं।

अहाना को जिस तरह का पढ़ने-लिखने को माहौल घर में मिला है यह उसका परिणाम है। इसका अर्थ यह है कि बच्चों को अच्छा माहौल देने की भी ज़रूरत है, बाक़ी काम तो वे ख़ुद ही कर लेंगे।

आस्तिक का चित्रांकन

आस्तिक भी तीसरी क्लास में पढ़ता है। वह बहुत अच्छा गाता भी है और नाचता भी है। एक बार वह कोई गाना सुन ले और एक बार वह कोई नाच देख ले, हू-बहू नक़ल करके वह गा-नाच सकता है। सबसे ख़ास बात यह कि वह उसी अन्दाज़ में गाता और नाचता है जिस अन्दाज़ में गाना गाया गया था या जिस अन्दाज़ में नृत्य किया गया था। आस्तिक को भी तस्वीर बनाना बहुत पसन्द है। उसकी ज़्यादातर तस्वीरों में आपको 'माँ' और 'दुर्गा माँ' ही नज़र आएँगी। वह उन्हें बहुत अलग-अलग तरीक़ों से सजाता है। लेकिन वास्तव में उसे जो भी अपने आसपास दिखाई देता है, वह उसका भी बख़ूबी चित्रांकन करता है। यह आदत अकसर बच्चों में होती है। भले ही वे हू-बहू वैसा नहीं भी बना



सकें परन्तु यदि कोई उनसे पूछे कि यह क्या बनाया है तो वे ठीक-ठीक बता देंगे कि क्या बनाया है।

दुर्गा माँ, आस्तिक का चित्रांकन

इसके अलावा आस्तिक को लिखना भी पसन्द है। बॉलीवुड अभिनेत्री श्रीदेवी के देहान्त पर आस्तिक ने उनके बारे में कुछ ऐसी ही एक कविता लिखी और उसको शीर्षक भी दिया,

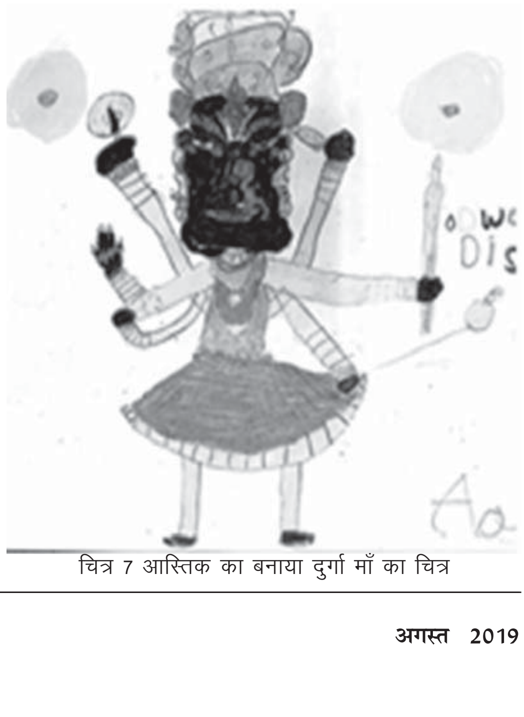


चित्र 6 आस्तिक का बनाया हुआ चित्र

‘श्रीदेवी का अन्तिम दिन’। साथ ही अपना नाम भी लिखा। अकसर ऐसा होता है कि किसी किताब को पढ़ते समय हम अगर उसके शीर्षक, लेखक, चित्र बनाने वाले के नाम पर भी ध्यान देते हैं और उसे अपने पढ़ने का हिस्सा बनाते हैं तो लिखते समय भी हम उन चीज़ों पर अपने आप ही ध्यान देते हैं। ठीक ऐसे ही जो बच्चे कहानी या कविता के शीर्षक को भी पढ़ते हैं या उसपर ध्यान देते हैं, वे बच्चे लिखते समय भी शीर्षक, लेखक आदि पर पूरा-पूरा ध्यान देते हैं। आस्तिक की कविता को ध्यान से देखने पर यह साफ़-साफ़ नज़र आएगा कि उसने श्रीदेवी की फ़िल्मों के ही गीतों की पंक्तियों को लेकर कविता की रचना की है। उन्हीं की एक और बहुत लोकप्रिय फ़िल्म के गाने की पंक्तियों को इस तरह से इस्तेमाल किया है, ‘काटे नहीं कटते दिन या रात’।

अब आप सोच सकते हैं कि इसमें क्या ख़ास है? ख़ास है श्रीदेवी की लोकप्रिय फ़िल्मों और गानों की जानकारी को इस तरह से इस्तेमाल करना। फिर उनमें अपनी ओर से तुकबन्दी करते हुए अपनी पंक्तियों को जोड़ना, जैसे– ‘काँटे नहीं कटते दिन या रात, तो मन में उदासी का निवास’। अन्तिम पंक्ति भी बहुत ही ख़ास है और अन्य फ़िल्मी गीतों से प्रभावित भी! अगर हम आस्तिक के शब्दों का चयन देखें तो वह कमाल का है और अहाना की तरह ही किसी वयस्क या बड़े व्यक्ति जैसा है। शब्दों की वर्तनी भी बहुत सही है। आस्तिक की कविता में उसके व्यक्तित्व की एक झलक तो यह मिलती है कि वह सिनेमा-प्रेमी है। फ़िल्म, फ़िल्मी गीत और नृत्य से उसका बहुत गहरा लगाव है, वह उसे बहुत प्रिय हैं। और पिछली बात की तरह वही बात, आस्तिक की कविता में जो कल्पना है वह भी किसी स्कूल में नहीं सिखाई जाती।

मुझे लगता है कि चिट्ठी, कहानी, कविता आदि लिखने के लिए सबसे पहले लिखने की इच्छा का होना ज़रूरी है। दूसरी बात यह समझ आती है कि सृजनात्मक लेखन या क्रिएटिव राइटिंग एक तरह का ‘एटीट्यूड’ (मनोभाव) है, एक तरह का ‘पैशन’ (जुनून) है। और यह उन लोगों में देखा जा सकता है जो लिखे बिना रह नहीं सकते। हाथ में रंग, पेन या पेंसिल आने की देरभर है, वे काग़ज़ पर कुछ-न-कुछ बनाना या लिखना शुरू कर देते हैं। यह सृजनात्मक लेखन तभी सम्भव है जब बच्चों को वैसा लिखने का



चित्र 7 आस्तिक का बनाया दुर्गा माँ का चित्र

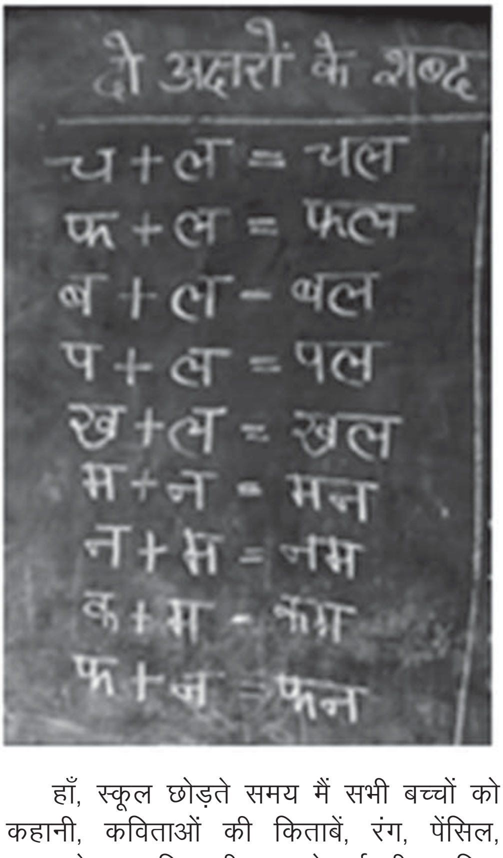
माहौल दिया जाए और उन्हें लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

अन्तिम बात! अक्तूबर में मैंने भी स्कूल छोड़ दिया, क्योंकि तीन महीने पूरे हो गए थे। कुछ दिन बाद मैं शनिवार को उसी स्कूल में गई, बच्चों से मिलने! पता चला कि मेरे जाने के बाद उन्हें कोई नई टीचर नहीं मिली तो क्लास के सारे बच्चों को पहली क्लास के अलग-अलग सेक्शनों में बैठा दिया गया। पूरी क्लास एक-दूसरे से अलग हो गई। यह मेरे लिए बहुत ही दुखद था, उससे भी ज़्यादा दुखद जब मुझे स्कूल आना बन्द करना था। लगा कि मेरे ही साथी मुझसे अलग हो गए। ये तो बहुत छोटे बच्चे हैं, एक-दूसरे के बिना कैसे रह पाएँगे? कैसे मन लगेगा इनका क्लास में? जब मन ही नहीं लगेगा तो पढ़ेंगे कैसे?

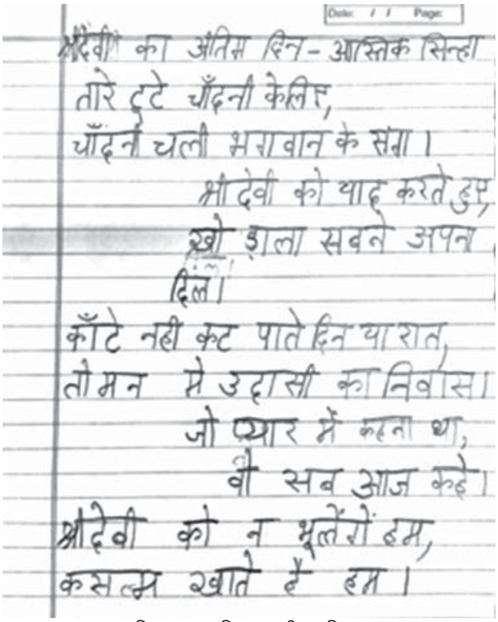
कैसी अजीब दुनिया होती है बच्चों की! आप भले ही किन्हीं एक-दो के साथ ही बहुत गाढ़ी दोस्ती रखो लेकिन फिर भी क्लास में सारे बच्चे अपनी नज़र के सामने चाहिए होते हैं। लक्ष्मी को सबसे ज़्यादा चाहिए थी, ज्योति जो उसकी सबसे 'गाढ़ी' दोस्त थी और उसके बाद इकरा, ख़ुशबू, काजल, गुनगुन...! लक्ष्मी के सेक्शन में ज्योति नहीं थी और ज्योति के सेक्शन में लक्ष्मी! ख़ैर, मैं मन कड़ा करके पहली क्लास के एक सेक्शन में गई। बच्चों से मुलाक़ात हुई। वे उदास से लग रहे थे। लक्ष्मी सहित सभी बच्चों की हँसी न जाने कहाँ चली गई थी! मेरी नज़र ब्लैकबोर्ड पर गई। वहाँ जो लिखा हुआ था उसे देखकर बहुत दुख हुआ कि पहली क्लास के बच्चे क्या लिख लेते हैं और टीचर क्या लिखवा रही हैं। आप ख़ुद ही देख लीजिए! यह लिखवाना बच्चों के पढ़ना, लिखना, सीखना के दृष्टिकोण से भी ठीक नहीं है और न ही उनकी भाषा सीखने की क्षमताओं के नज़रिए से! यह मुझे बच्चों की क्षमताओं का अपमान-सा लगा!

किसी भी क्लास में इस तरह का लेखन या लेखन का इस तरह का शिक्षण यह बताता है कि शिक्षक की पढ़ने-लिखने सम्बन्धी समझ कितनी 'ग़लत' और 'संकीर्ण' है। लेखन यांत्रिक कौशल नहीं है, वह एक सृजनात्मक कुशलता है जिसमें चिन्तन प्रक्रिया लगातार शामिल रहती है। अब आप स्वयं ही सोचिए कि बच्चे ऐसा कहाँ बोलते हैं और अगर पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया भी यूँ हिज्जों में चलेगी तो बच्चों के लिए हम कठिनाई ही पैदा कर रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि इस तरह के लेखन में 'अर्थ' है ही नहीं और हम बार-बार इस बात पर बल देते हैं कि भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में 'अर्थ' ही केन्द्र में होता है और होना चाहिए।

बच्चे के आसपास मौजूद 'परिवेश' बच्चों को लेखन में मदद करता है। बच्चे पूरे-पूरे शब्द या वाक्य भी लिखने की क्षमता रखते हैं बशर्ते हम उन्हें ऐसे अवसर उपलब्ध कराएँ।



हाँ, स्कूल छोड़ते समय मैं सभी बच्चों को कहानी, कविताओं की किताबें, रंग, पेंसिल, रबड़, पेपर आदि सभी कुछ दे गई थी। आख़िर यह सारा सामान उन्हीं के लिए तो था। लक्ष्मी को ख़ासतौर पर दो पेंसिलें दी थीं, क्योंकि



चित्र 8 आस्तिक की कविता

उसकी छोटी पेंसिल मैंने उससे माँग ली थी तो उसके बदले एक पेंसिल तो उसे देनी ही थी और दूसरी वह पेंसिल थी जो क्लास के बाक़ी बच्चों को भी मिली थी। बच्चों से मुलाक़ात करके वापस जाते समय मन बहुत उदास था। बच्चों का मन कितना कोमल होता है, इतने छोटे-छोटे बच्चे अपनी-अपनी ज़िन्दगी में न जाने क्या-क्या देखते हैं, क्या-क्या झेलते हैं? मैं उनकी जगह ख़ुद को रखकर सोच रही थी। शायद वे बच्चे मुझे भूल गए होंगे लेकिन मेरे सपनों में वे बच्चे आज भी जब-तब आ ही जाते हैं! आख़िर उनसे रिश्ता ही ऐसा है।

लक्ष्मी उसी पेंसिल से ही लिख रही थी। उसने दूसरे बच्चों की तरह वही लिखा था जो मैडम ने ब्लैकबोर्ड से देखकर लिखने को कहा था। लेकिन लक्ष्मी की कॉपी में झोंपड़ी नहीं मिली। न जाने कहाँ खो गई लक्ष्मी की झोंपड़ी! और उस झोंपड़ी के साथ उसका बचपन भी, उसकी हँसी भी और उसके जवाब, तर्क और उसकी खिलखिलाहट!

उषा शर्मा तीन दशक से प्रारम्भिक, विद्यालयी और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत रही हैं। उन्हें इन क्षेत्रों में पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री निर्माण का लम्बा अनुभव है। वे एनसीईआरटी की बाल पत्रिका 'फिरकी बच्चों की' व जर्नल 'प्राथमिक शिक्षा' की शैक्षणिक सम्पादक हैं। वर्तमान में एनसीईआरटी में प्राध्यापक व समग्र भाषा कार्यक्रम की समन्वयक हैं।
सम्पर्क : ushasharma1730@gmail.com